शान्ति मन्दिर द्वारा प्रकाशित यह ई-पत्रिका आप सबको समर्पित है ।

सिद्ध मार्ग

© Shanti Mandir अप्रैल २०११, संस्करण-४

अगर हम वास्तविक रूप से मान लेते हैं कि मैं इस सिद्ध परंपरा में जुड़ गया हूँ, इसको मैंने अपना लिया है, तो अपने आप को पूरी तरह इसमें खो दें ।

प्रिय आत्मन्, सप्रेम जय गुरुदेव! सिद्ध मार्ग ई-पत्रिका का चौथा अंक प्रस्तुत है । इस अंक में परमपूज्य गुरुदेव श्री स्वामी नित्यानन्द जी द्वारा बासबादाम, आगरा में दिए गए प्रवचन के सम्पादित अंश के अतिरिक्त गुरुदेव द्वारा गठित सत्सङ्ग मंडली द्वारा मार्च एवं अप्रैल में उत्तर भारत के विभिन्न स्थानों में आयोजित सत्सङ्ग कार्यक्रमों का विवरण भी सम्मिलित है ।

सिद्ध मार्ग टीम

गुरुदेव का प्रवचन ।

मेरा निवेदन है कि यदि हम सत्संग में आएँ तो सत्संग में पूर्ण रूप से भाग लें । भाग किस तरह से लें? दत्तचित्त होकर श्रवण करें और फिर विचार करें कि यहाँ जो भक्ति का, ज्ञान का, कर्म का प्रवाह है उसका हम अपने जीवन में कैसे उपयोग करें ? बाबा जी कहते थे कि सद्गुरु की पकड़ मगरमच्छ जैसी होती है। अगर हम वास्तविक रूप से मान लेते हैं कि मैं इस सिद्ध परंपरा में जुड़ गया हूँ, इसको मैंने अपना लिया है, तो अपने आप को पूरी तरह इसमें खो दें । जब हम अपनें आप को उस सद्गुरु की शरण में छोड़ देते हैं तो ध्यान स्वतः हो जाता है । भूल जाते हैं कि मैं ध्यान कर रहा

"मैं" जब हट जाता है तो स्वभाविकतः हम सद्गुरु की शरण में आ जाते हैं।

हूँ, मैं भजन कर रहा हूँ, मैं जप कर रहा हूँ। "मैं" जब हट जाता है तो स्वभाविकतः हम उनकी शरण में आ जाते हैं और हम ये देखते हैं कि सब हो रहा है। मैं भी द्रष्टा बनकर देख रहा हूँ कि मेरे जीवन में सब हो रहा है। हो कैसे रहा है ? बस उन्हीं की कृपा है और उन्हीं की कृपा से सब हो रहा है। गड़बड तब होती है जब हम ये सोचते हैं कि थोड़ा मैं भी कर लेता हूँ, उनको क्यों ज्यादा तकलीफ देना। ऐसे गड़बड़ हो जाती है कि ५०-७० टका तुम कर लो या ५०-७० टका मैं कर लेता हूँ। तुम भी ज्यादा कष्ट मत करो, मैं भी नहीं करता हूँ। परन्तु हम शरणागत आ गये है। जब हम कह देते हैं कि हम तुम्हारे शरणागत आ गये हैं तो फिर उसमें ५० टका, ७० टका, ८० टका कहाँ?१००टका तुम्हारा है। १०० प्रतिशत आपके ऊपर छोडा। किसी ने अभी शादी का उदाहरण देते हुए कहा कि जब कोई पति या पत्नी कहता या कहती है कि मेरी गलती तो सिर्फ ५० प्रतिशत है, ५० प्रतिशत दूसरे पक्ष की है तो उन्होंने कहा कि हमेशा ही शादी में गड़बड़ होगा। हमेशा ही वो व्यक्ति ५० प्रतिशत ही करेगा या करेगी। क्योंकि वो सोचेगा या सोचेगी कि दूसरा ५० तो उनको करना है। तो यहाँ भी ये गड़बड़ हो सकती है कि हम सोचे कि मैं आधा करुँगा आधा वो करें। फिर ये हिसाब किताब रखना पड़ता है किसने, कब, किस समय, कौन सा दिन, क्या आधा किया ? कब मैं आगे हूँ या वो आगे हैं? कब मैं पीछे हूँ, कब वो पीछे हैं। ये सब हिसाब क्यों करना? इस बात से सहमत हैं सभी कि १०० प्रतिशत समर्पण कर दिया, छोड़ दिया परन्तु हम यही सोचते रह जाते है कि वास्तविक मैंने अगर छोड़ दिया तो

क्या तुमने १०० प्रतिशत सब कुछ सद्गुरु को समर्पित कर दिया है?

मेरे जीवन का क्या होगा? मैं कैसे चलूँगा, कैसे चलाउँगा, मेरी भी तो कुछ इच्छाएँ हैं। कहा जाता है कि राजा जनक के समय में एक कथा हुई थी। कथा के बीच में याज्ञवल्क्य ऋषि ने समर्पण के विषय में चर्चा की और सभी बैठे थे उन से पूछा, क्या तुम १०० प्रतिशत सब कुछ सद्गुरु को समर्पित कर देते हो? सब बोले हाँ हाँ। राजा जनक भी बैठे हुए थे, उनसे भी पूछा कि राजा जनक क्या तुम भी सब कुछ सद्गुरु को समर्पित करते हो? राजाने कहा अवश्य महाराज, इसमें कोई शंका, संदेह, संकोच नहीं कि सब कुछ सद्गुरु को समर्पित करता हूँ। तो याज्ञवल्क्य ऋषि बोले, बहुत अच्छा ऐसी सबके मन की भावना है, कितना अच्छा है। अगले दिन भी जैसे आज सत्संग हो रहा है संत्संग होने लगा, पंडाल भरा हुआ है। सभी अपने घर बार छोड़कर सत्संग में मस्त होकर बैठे हैं, पीछे से कोई दौड़ता हुआ आया कि गाँव में आग लगी है, गाँव में आग लगी है। गाँव में आग लगी है मतलब घर में आग लग गयी होगी। तो सब उठकर भाग गये। राजा जनक बैठे रहे। सब लौटकर आये, चुपचाप मुण्डी नीचे किये सत्संग में बैठ गये। बैठे तो याज्ञवल्क्य ऋषि जी ने पूछा, आप सब लोग कहाँ गये थे ? बोले महाराज जो वाणी आई थी ना पीछे से, आग लग गयी, आग लग गयी, तो हम देखने गये थे कि घर में सब कुछ ठीक है कि नहीं ? कि क्या हमारे घर में आग लगी है? कहाँ आग लगी है? महाराज ने पूछा कि फिर लौटकर क्यों आये ? बोले आग तो कहीं लगी ही नहीं है। राजा जनक से पूछा कि महाराज आपका तो इतना बड़ा महल, इतना सब

जाको राखे साँईयाँ मार सके ना कोय ऐसी भावना हमारे हृदय में, हमारे अन्तःकरण में होनी चाहिये ।

कुछ उस महल के अन्दर, आप क्यों नहीं भागे देखने के लिए कि महल में आग लगी है कि नहीं ? जब गाँव में आग लगी है तो महल में भी तो लग सकती है । राजा बोले, महाराज कल तो सब कुछ आपको समर्पित कर दिया था । आग लगी है तो आपकी समस्या आप देखें । आपकी सम्पत्ति की हम क्यों चिन्ता करें? जब हमने सब कुछ आपके ऊपर छोड़ दिया है, जब सब कुछ सद्गुरु को समर्पित कर दिया है? जाको राखे साँईयाँ मार सके ना कोय ऐसी भावना हमारे हृदय में, हमारे अन्तःकरण में होनी चाहिये । जब वो रक्षा करता है, १०० प्रतिशत करता है । जब वो हमारी देखभाल करता है, उसकी देखभाल में कोई संदेह, संकोच नहीं होता । हृदय खोलकर देता है, हृदय खोलकर हमारा सब कार्य करता है । परंतु हम कंजूसी करते है । हम अपने भेदभाव वाले, सोच विचार वाले मन को लगाते रहते हैं । तो इसके लिए हम जो एक बार ये सोच लिए हैं, समझ लिए हैं, मान लिए हैं, कि हमने अपने सद्गुरु के शरण में सब कुछ दे दिया है, तो फिर जैसे उन्होनें हमें बताया, समझाया, उसी तरह से हम अपने जीवन को जियें । बाबा जी के बारे में जब हम विचार करते हैं तो सिर्फ मन्त्र, ध्यान, ज्ञान, गुरुसेवा, मैं मानता हूँ इतना ही नहीं, परंतु एक जीवन की शैली उन्होनें दी । एक व्यक्ति सद्गुरु के पास आकर, उनसे नाम ले कर, उनको समर्पित हो कर, किस तरह से वह अपना जीवन जिये ? किस तरह से वह अपने आप को बनाये ? ये मार्गदर्शन, ये उपहार, ये कृपा बाबा जी ने दी । आज भी हमारे साथ, ऑस्ट्रेलिया से बाबा के एक भक्त १९७४ से जुड़े हुए हैं । पिछले महीने से

आप जो सत्संग का अनुभव कर रहें है यह उन सद्गुरु की ही कृपा है, उनका आशीर्वाद है ।

हमारे साथ वो भी यात्रा कर रहे हैं । अलग अलग स्थानों पर जा रहे है । कई बार वो कहते हैं कि जीवन में अगर एक घटना अच्छी घटी तो मुक्तानन्द बाबा मिले । बोले उस दिन के बाद जीवन कैसा परिवर्तित हो गया है मैं बता नहीं सकता । महात्मा गाँधी जी कहते थे अगर हम चाहते हैं कि जग में हम परिवर्तन देखें तो सबसे पहले हमें अपने आप में परिवर्तन लाना पड़ेगा । हम ये नहीं सोच सकते कि ये जग बदल जाए, हमको न बदलना पड़े । जब हम बदलेंगे, हमारे साथ वाले बदलेंगे । हमारे साथ वाले औरों को बदलेंगे । बाबाजी ने हज़ारों लाखों पर कृपा की । वो हज़ार लाख आज उस कृपा को आगे बढ़ा रहे हैं । आप जो सत्संग का अनुभव कर रहें है यह उन सद्गुरु की ही कृपा है, उनका आशीर्वाद है । जो उन्होंने अपने जीवन में फलित किया है और जब हम स्मरण करते है कि वो कृपा क्या है तो शरीर रोमांचित हो जाता है । मन समझ नहीं पाता है कि मेरे ऊपर क्या बीत रहा है । हृदय गद्गद् हो जाता है । नयनों से अश्रु बहते हैं, मुख पर एक आनन्द, एक हँसी, ऐसा हम अनुभव करते हैं । अगर हम को कोई पूछे कि क्या हुआ है तो नारद जी भक्ति सूत्र में कहते हैं कि मुकास्वादनात् । जैसे कोई गूँगे को आप गुलाब जामुन खिला दो और उसको कहो कि गुलाब जामुन कैसा है, वो आपको नहीं समझा पायेगा । शब्द किस तरह से तैयार करें उसका अनुभव, उसका ज्ञान उसे नहीं है । उसी तरह जब कृपा हम पर बरस जाती है, उसका हम वर्णन हम नहीं कर सकते । भक्तिसूत्र में ही नारद जी कहते हैं, यद् ज्ञात्वा मत्तो भवति स्तब्धो भवति

आत्मारामो भवति । उस परमात्मा का जिसको अनुभव हो गया है उसकी मति स्तब्ध हो जाती है, चित्त शान्त हो जाता है । उस में कुछ विचार या विकल्प उठते नहीं । बस एक आत्मा का अनुभव उसके अन्दर से उभर रहा है और उस मस्ती में वो खोया है । तो आप विचार कीजिये जो प्रश्न हुआ था कि बाबा के सामने कैसा ध्यान लगता है तो इस तरह से ध्यान लगता है कि मैं कौन हूँ ये उनके सामने भूल जाते हैं । वो बाबा हैं, मैं एक शिष्य हूँ , एक जीव हूँ, एक भिन्न हूँ, ये भिन्नता मिट गयी है, अभिन्नता का अनुभव हो रहा है, एकता का अनुभव हो रहा है और उस एकता में समरस भावना का प्रवाह अन्दर से उठ रहा है । परन्तु ये जब तक हम अपने में अनुभव नहीं करते हैं, जब तक हम समझ नहीं पाते हैं,जब तक हम अपने आप को उस अवस्था तक नहीं ले आते हैं तब तक ये सब शब्दावली है । मन में प्रश्न होंगे, क्या ये सम्भव है? क्या ऐसा हो सकता है? परन्तु जिस किसी ने भी अनुभव किया वो तो आपको बोलेगा निस्सन्देह यह सम्भव है । मैं आपको बता नहीं सकता हूँ, समझा नहीं सकता हूँ, कुछ बोल नहीं सकता हूँ । बस आपको अनुभव करना पड़ेगा । हम एक सद्गुरु से जुड़े हैं, एक अध्यात्मिक मार्ग से हम जुड़े हैं, तो हमें सोचना है, विचार करना है कि अगर मैं कही जुड़ा हूँ तो मुझे अभी किस तरह का व्यवहार करना चाहिये । जब लड़की ब्याह करके पति के घर जाने वाली होती है, आज कल तो पता नहीं, कहा जाता है कि पुरानी माताएँ उसको समझाती थीं, देख तेरे से बड़ी जेठानियाँ होंगी, ननद भी होंगी और तू छोटी नयी जा रही है, थोड़ा

उस परमात्मा का जिसको अनुभव हो गया है उसकी मति स्तब्ध हो जाती है, चित्त शान्त हो जाता है । उस में कुछ विचार या विकल्प उठते नहीं ।

वहाँ जाकर समझ कर रहना, मिल जुल कर रहना । उस घर में जाकर मिठास, प्रेम, एकता, ये भाव लाना, उस घर को उखेड़ मत देना । यह व्यवहार माता अपने अनुभव से अपनी पुत्री को बता रही है, तो पुत्री कोशिश करती है कि जिस तरह से माता ने उपदेश दिया है उस तरह का व्यवहार अपने नये घर में, पति के घर में करूं। तो वैसे ही पहले जीव भटकता हुआ होता है, कहीं का भी नहीं, कहीं भी गया, किससे बोला, कुछ भी बोला, कहीं भी खा लिया, कहीं भी कुछ भी कर लिया । क्यों? कुछ अन्दर ऐसी भावना नहीं है कि मैं कहीं का हूँ, किसी से जुड़ा हुआ हूँ, किसी मार्ग से जुड़ा हुआ हूँ, किसी सद्गुरु के शरण में हूँ । ऐसी कोई भावना नहीं, जहाँ मित्र ले गये वहाँ चले गये और संसार की ठोकरें खाते रहें । जब ठोकर बहुत खा लिया तब हम सद्गुरु की शरण में आते हैं और उसको कहते है कि बस! बस! बस! अभी मैं विश्राम चाहता हूँ। सद्गुरु हमें अपने आश्रय में ले लेते हैं और फिर वो भी हमको धीरे धीरे समझाने लगते हैं, बताने लगते हैं कि हमें अपनें में कुछ परिवर्तन लाना पड़ेगा और परिवर्तन किस तरह से? सर्वप्रथम जल्दी उठो, सुबह का जो एक सुन्दर समय है, सूर्योदय के पहले नहा धोकर भगवद् चिन्तन, ध्यान, भजन, सत्संग करो । पुष्पों के सुगन्ध में, दीपक के प्रकाश में, धूप की सुगंध और अपने अन्तर का जो आनन्द है उसमें कुछ समय अपने आप को भूलकर, सब कुछ छोड़कर, अपने मन, अपनी इन्द्रियों को वहाँ ले जाओ । उस मस्ती को फिर अपने जीवन में अपने साथ ले जाओ, वहाँ उस आसन पर, उस पूजा कमरे

सद्गुरु हमें अपने आश्रय में ले लेते हैं और फिर वो भी हमको धीरे धीरे समझाने लगते हैं, बताने लगते हैं कि हमें अपनें में कुछ परिवर्तन लाना पड़ेगा

गुरुगीता में हम पढ़ते है कि "गुरू रक्षति पार्वती", भगवान शिव पार्वती को कहते है रक्षा तुम्हारी कौन करता है, तो सद्गुरु करता है ।

में मत छोड़ो । अपने साथ उस शान्ति, उस आनन्द को ले जाओ । जहाँ कहीं भी जाओ, जिस किसी को भी मिलो, उसे वो शान्ति, वो मस्ती, वो आनन्द प्रदान करो । इस तरह से वो भी हमें व्यवहार करने को सिखाते हैं । यह हमारा मन, हमारा विचार, हमारी जो भावनाएँ हैं, उसमें हम बदलाव लायें । परमात्मा हमारे कण कण में भरा हुआ है ही परन्तु हमको उसका ज्ञान होना चाहिये । उस ज्ञान में हम तटस्थ हो जाएँ कि जहाँ कहीं भी जाता हूँ वो सद्गुरु, वो परमात्मा मेरे साथ ही रहते है । गुरुगीता में हम पढ़ते है कि "गुरू रक्षति पार्वती", भगवान शिव पार्वती को कहते है रक्षा तुम्हारी कौन करता है, तो सद्गुरु करता है । सदैव उनकी कृपा हमारे पास, हमारे साथ रहती है । तो हम सुबह शाम कम से कम दिन में दो बार समय निकालें, अपना जो पूजा कक्ष है वहाँ जाएँ, दीपक जलायें, पुष्प चढ़ायें, धूप करें, हमको जो मन्त्र दिया है, पाठ दिया है, वह शान्त चित्त हो कर, सब कुछ भूलकर मोबाईल बन्द करके, अपने आप को तन मन से हम वहाँ बिठायें, लगायें । अपने मन को उस में लगा दो । फिर बाह्य सब विचार छोड़ो और जैसे जैसे वो अपने से छूटता जायेगा वैसे वैसे हमारा संसार बढ़िया बनेगा, सुन्दर बनेगा क्योंकि हमारे अन्तर में जो रस परमात्मा ने हमको जन्म से दिया है, वो रस हम अपने आप में तो अनुभव करेंगे ही परन्तु वही रस हम सभी में अनुभव करेंगे । बाबा जी इसे एक शिवसूत्र का श्लोक था उससे बोलते थे " लोकानन्दः समाधिसुखम् " संसार में रहते हुए, संसार में अपने कर्तव्य को निभाते हुए, सद्गुरु के दिये हुए वचनों के अनुसार अपने

जीवन को जीते हुए, सभी लोगों के बीच समाधि के आनन्द का, सुख का हम अनुभव करें ।

जीवन को जीते हुए, सभी लोगों के बीच समाधि के आनन्द का, सुख का हम अनुभव करें । मैं मानता हूँ यह बाबा जी का विशेष संदेश, विशेष आशीर्वाद, विशेष कृपा है । एक कहानी कहकर अपनी बात को विराम दूँगा । शायद यह कहानी आप सभी ने सुनी होगी । नारद जी भगवान् के पास जाकर प्रश्न करते हैं कि भगवन् तुम्हारे सबसे प्रिय भक्त कौन हैं? उत्तर में तो वे यही चाहते थे कि नारद तुम ही हो क्योंकि देवर्षि नारद चौबीस घण्टा वीणा लेकर भजन किया करते थे । भगवान ने कहा " बासबादाम में एक किसान रहता है,वो किसान मेरा सबसे प्रिय भक्त है"। नारद जी हड़बड़ा गये कि यह क्या गड़बड़ हो गया? चौबीस घण्टे तो मैं भजन करता हूँ, चौबीस घण्टा से अधिक तो कोई समय है ही नहीं । भगवान् के हिसाब किताब में जरूर कोई गड़बड़ है । तुरन्त भगवान से पूँछते हैं, कौन सा किसान, क्या घर, क्या एड्रेस, पता बता दो । नारद जी वहाँ पहुँच जाते हैं । अपना रूप बदलकर ब्राह्मण के रूप में आते हैं । किसान उनका स्वागत करता है कि आईये, आईये महाराज धन्य हो गया हूँ कि कोई ब्राह्मण मेरे यहाँ आया है । नारद जी कहते हैं कि मैं यात्रा पर हूँ पर थोड़ा थक गया हूँ दो तीन दिन यहाँ रहना चाहता हूँ । किसान कहता है कि महाराज अवश्य आप रहें तो नारद जी को यही देखना है कि वो कितना भजन करता है, कितना पूजा करता है, कितना क्या कुछ करता है । नारद जी देखते हैं सुबह वो मन्दिर जाता है, नहा धोकर अपना एक दीप जला देता है शाम को खेत से लौटकर हाथ पैर धोकर अपना मत्था टेकता है, भोजन खाता है, सो जाता है । दो

भगवान ने पूछा, हे नारद ऋषि, कितनी बार आपने नारायण, नारायण का जाप किया जो आप चौबीसों घण्टे करते हो?

तीन दिन नारद जी ने देखा, उससे पूछा, कि भाई तुम सुबह मंदिर में जाते हो, शाम को मन्दिर में जाते हो, बीच में, दिन में, रात में कभी मंदिर में जाते हो ? किसान ने बोला समय नहीं है खेत के काम में लगा हुआ हूँ, सुबह जाता हूँ, नमन करता हूँ, याद करता हूँ, दिन भर अपना सब कुछ करके आता हूँ, शाम को पुनः जाता हूँ, आभार व्यक्त करता हूँ, खा पी के सो जाता हूँ। नारद जी जाते हैं भगवान के पास कि हे भगवन् ! मैने तुमसे पूछा था कि तुम्हारा सबसे प्रिय भक्त कौन है और तुमने कहा वो किसान । वो तो सिर्फ सुबह और शाम दो ही बार तुम्हें याद करता है, मैं तो चौबीस घण्टे तुम्हारा कीर्तन करता हूँ । भगवान् बोले नारद ! यह लो कटोरी, इसमें तेल भरा हुआ है, यह कटोरी अपने सिर पर रखो और इस पृथिवी का तुम जरा एक चक्कर मारकर आओ । और आगे पीछे सिपाही चलेंगे। एक बूँद भी तेल इस कटोरी से अगर नीचे गिरा तो तुम्हारा सिर काट देंगे, उधर का उधर ही, बिना कुछ पूछे । नारद जी बोले ठीक है, लिया कटोरी तेल का, चले भ्रमण करने । विश्व भ्रमण करके आये । भगवान् के पास कटोरी रख दिया । भगवान ने पूछा, हे नारद ऋषि, कितनी बार आपने नारायण, नारायण का जाप किया जो आप चौबीसों घण्टे करते हो? तेल का कटोरी सिर पर, एक बूँद भी ना गिरे ऐसी अवस्था में नारायण, नारायण कितनी बार जपा? नारद जी बोले, भगवन् ये दोनों सिपाही आगे पीछे तलवार लिये चल रहे थे, कि बूँद गिरे और इसका सिर काट दें, क्योंकि आपने कह दिया था कि बिना कुछ पूछे काट दो । और आप पूछ रहे हो कि जाप कितनी बार किया । मैं तो

बाबा जी कहते है कि संसार में रहते हुए, अपने कर्तव्य को निभाते हुए, अपने परिवार का सब कुछ करते हुए, भगवद्भजन, ध्यान, संकीर्तन जो कुछ भी हमसे हो सकता है हम करें।

बस कटोरी पर ही ध्यान रखे हुआ था कि कटोरी में से एक बूँद तेल न गिरे। अरे भाई नारायण का स्मरण कब आयेगा, ये तो तेल का स्मरण हो रहा था। भगवान् बोले वो किसान अपनी सब जिम्मेदारियों को निभाते हुए, खेत में अपना काम करते हुए, संसार में रहते हुए सुबह-शाम बिना भूले अपने मंदिर मे जाकर अपने भगवान की प्रार्थना करता है। उसके भी तो आगे पीछे लगे हैं, पत्नी लगी है, बच्चे लगे हैं, संसार वाले लगे हैं। वो भी तो सब तैयार हैं कि कब इसको मारें। लेकिन बिना भूले सुबह शाम वह जाकर अपने भगवान् को नमन करता है, प्रार्थना करता है। इसके लिए बाबा जी कहते हैं कि संसार में रहते हुए, अपने कर्तव्य को निभाते हुए, अपने परिवार का सब कुछ करते हुए, भगवद्भजन, ध्यान, संकीर्तन जो कुछ भी हमसे हो सकता है, हम करें तो बहुत अच्छी बात होगी। इसी के साथ अपने वक्तव्य को विराम देता हूँ। सभी का फिर एक बार बड़े प्रेम और सम्मान से हार्दिक स्वागत। सद्गुरुनाथ महाराज की जय।

सत्सङ्ग मंडली द्वारा उत्तर भारत में सत्सङ्ग कार्यक्रम का विवरण

पूज्य गुरुदेव महामण्डलेश्वर स्वामी नित्यानन्द सरस्वती जी महाराज की प्रेरणा एवं अपार कृपा से इस वर्ष के प्रारम्भ में एक सत्संग मंडली गठित की गई जिसमें डा. रामपाल सिंह (संयोजक), स्वामी करुणानन्द जी, स्वामी शिवानन्द जी तथा श्री हरनारायण जी सम्मिलित थे। इस सत्संग मडली द्वारा मार्च एवं अप्रैल २०११ में उत्तर भारत के ७ राज्यों में सत्संग किया गया। इनमें उत्तराखण्ड के रुड़की, ऋषिकेश तथा हरिद्वार में, हिमाचल प्रदेश के कोटलाखुर्द तथा बदौली में, पंजाब के लुधियाना तथा कपूरथला में, हरियाणा के पंचकुला, अम्बाला, नीलोखेड़ी, करनाल, कैथल, कुरुक्षेत्र, यमुनानगर तथा पानीपत में, उत्तर प्रदेश के बरेली, कटसारी (सुल्तानपुर), वाराणसी, गुरहा, बासबादाम, दखिनारा, मथुरा, आगरा तथा झाँसी में, मध्य प्रदेश के डबरा में, चण्डीगढ़ में तथा दिल्ली में सत्संग का आयोजन किया गया। कुल २७ स्थानों पर ३३ सत्संग आयोजित किये गये जिनमें ४,००० से अधिक भक्तों ने भाग लिया। अधिकांश भक्तों ने बताया कि उन्हें इन कार्यक्रमों में नाम संकीर्तन तथा ध्यान में भाग लेकर बहुत शान्ति एवं आनन्द का अनुभव हुआ। बाबाजी के कुछ पुराने भक्तों ने कहा कि उन्हें बाबा मुक्तानन्द का स्मरण हो आया और उनके प्रेम तथा उपस्थिति की अनुभूति हुई। इन सत्संग कार्यक्रमों की सफलता से प्रभावित होकर बदौली, वाराणसी, मथुरा, आगरा, डबरा, कपूरथला, करनाल, बरेली, कटसारी तथा दखिनारा के भक्तों ने नियमित सत्संग आयोजित करने का निश्चय किया। अधिकांश सत्संगों में भण्डारे का आयोजन भी किया गया। इन सभी सत्संग कार्यक्रमों का सफलता पूर्वक आयोजन श्रीगुरुदेव की कृपा से ही संभव हो सका है।

सद्गुरुनाथ महाराज की जय।

ब्रह्मानन्दं परमसुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिं
द्वन्द्वातीतं गगनसदृशं तत्त्वमस्यादिलक्ष्यम् ।
एकं नित्यं विमलमचलं सर्वधीसाक्षिभूतं
भावातीतं त्रिगुणरहितं सद्गुरुं तं नमामि ॥

I bow to the Sadguru, who is the bliss of Brahman and the bestower of the highest joy. He is absolute. He is knowledge personified. He is beyond duality, all pervasive like the sky, and is the object of Thou art That.

He is One. He is eternal. He is pure. He is steady. He is the witness of all thoughts. He is beyond all modifications (of mind and body) and is free from the (influence of the) three guṇas.

– Guru Gītā, verse 89

SHANTI MANDIR
Temple of Peace